ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.21, No2, April – June, 2026/324

अभिलेखागार, संग्रहालय और शोध की संभावनाए

श्रीमती रूकमणी शर्मा

https://doi.org/ 10.61410/had.v21i2.309

सारांशः

अभिलेखागार और संग्रहालय किसी भी राष्ट्र की ऐतिहासिक चेतना, सांस्कृतिक स्मृति तथा बौद्धिक विरासत के मूल आधार होते हैं। ये संस्थान समाज के अतीत को सुरक्षित रखने के साथ साथ वर्तमान और भविष्य के शोध के लिए प्रामाणिक स्रोत प्रदान करते हैं। अभिलेखागारों में प्रशासनिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक महत्व के दस्तावेज संरक्षित रहते हैं, जबकि संग्रहालयों में मूर्त एवं अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर को संजोया जाता है। आधुनिक युग में डिजिटल तकनीक के विकास ने अभिलेखागार और संग्रहालयों की पहुँच को व्यापक बनाया है, जिससे शोध की संभावनाएँ और अधिक सशक्त हुई हैं। इतिहास, समाजशास्त्र, मानवविज्ञान, कला, विज्ञान तथा पर्यावरण अध्ययन जैसे विविध क्षेत्रों में इन संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत लेख में अभिलेखागार एवं संग्रहालयों की अवधारणा, प्रकार, कार्य, शोध में उनकी उपयोगिता, भारत में वर्तमान स्थिति तथा शोध की संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है। साथ ही संरक्षण, संसाधनों की कमी और डिजिटलीकरण जैसी चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला गया है। यह लेख शोधार्थियों और शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

प्रमुख शब्दावलीः अभिलेखागार, संग्रहालय, शोध, सांस्कृतिक धरोहर, डिजिटल संरक्षण

भूमिकाः

मानव सभ्यता का इतिहास केवल तिथियों, युद्धों या शासकों की सूची नहीं है, बल्कि वह ज्ञान, अनुभव, संस्कृति और सामाजिक चेतना का सतत प्रवाह है। इस प्रवाह को सुरक्षित रखने और समझने का कार्य अभिलेखागार और संग्रहालय करते हैं। अभिलेखागार वे संस्थान हैं जहाँ प्रशासनिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व के दस्तावेजों का संरक्षण किया जाता है, जबकि संग्रहालय मूर्त और अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरकृजैसे पुरावशेष, कलाकृतियाँ, वैज्ञानिक उपकरण, लोक–संस्कृति की वस्तुएँकृको सुरक्षित रखते हुए उन्हें जनसामान्य के लिए प्रदर्शित करते हैं। ये दोनों संस्थान किसी भी समाज की सामूहिक स्मृति और पहचान के संरक्षक माने जाते हैं।

भारत जैसे प्राचीन और विविधतापूर्ण सभ्यता वाले देश में अभिलेखागार और संग्रहालयों का महत्व और भी बढ़ जाता है। यहाँ वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक की समृद्ध परंपरा उपलब्ध है, जिसमें ताम्रपत्र, शिलालेख, पांडुलिपियाँ, राजकीय फरमान, औपनिवेशिक अभिलेख और स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित दस्तावेज शामिल हैं। इन स्रोतों के माध्यम से इतिहासकार न केवल घटनाओं का पुनर्निर्माण करते हैं, बल्कि सामाजिक संरचनाओं, राजनीतिक प्रक्रियाओं और सांस्कृतिक परिवर्तनों की गहन व्याख्या भी करते हैं।

अभिलेखागार और संग्रहालय शोध के प्राथमिक स्रोत के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इतिहास, समाजशास्त्र, मानवविज्ञान, कला इतिहास, पुरातत्व, विज्ञान और पर्यावरण अध्ययन जैसे विविध विषयों में

- **सहायक आचार्य : शिक्षा विभाग, जगन्नाथ विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)**

इन संस्थानों की भूमिका अनिवार्य है। अभिलेखीय दस्तावेज जहाँ प्रामाणिक तथ्यों का आधार प्रदान करते हैं, वहीं संग्रहालयीय वस्तुएँ अतीत के जीवन, तकनीक और कलात्मक अभिव्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप में समझने में सहायक होती हैं। इस प्रकार ये संस्थान अंतर्विषयी शोध को भी प्रोत्साहित करते हैं।

आधुनिक युग में ज्ञान–आधारित समाज और सूचना प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने अभिलेखागार और संग्रहालयों की भूमिका को नया आयाम दिया है। डिजिटलीकरण, ऑनलाइन कैटलॉग, वर्चुअल संग्रहालय और ओपन–एक्सेस प्लेटफॉर्म के माध्यम से शोधार्थियों की पहुँच अब सीमाओं से परे हो गई है। डिजिटल मानविकी, डेटा विश्लेषण और तुलनात्मक अध्ययन जैसे नए शोध क्षेत्र अभिलेखागार एवं संग्रहालयों से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। इससे न केवल शोध की गति बढ़ी है, बल्कि वैश्विक स्तर पर ज्ञान का आदान–प्रदान भी सशक्त हुआ है।

हालाँकि, इन संभावनाओं के साथ कई चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं, जैसे संरक्षण की समस्या, संसाधनों और प्रशिक्षित मानवबल की कमी तथा तकनीकी असमानता। इसके बावजूद अभिलेखागार और संग्रहालय शोध और शिक्षा के ऐसे केंद्र बने हुए हैं, जिनकी प्रासंगिकता समय के साथ और बढ़ती जा रही है।

इस पृष्ठभूमि में प्रस्तुत लेख का उद्देश्य अभिलेखागार और संग्रहालयों की अवधारणा, उनके प्रकार, शोध में उनकी भूमिका तथा भविष्य की शोध–संभावनाओं का समग्र अध्ययन करना है, ताकि इन संस्थानों के महत्त्व को अकादमिक और सामाजिक दोनों स्तरों पर स्पष्ट किया जा सके।

अभिलेखागार की अवधारणा और प्रकारः

अभिलेखागार वे संस्थान होते हैं, जहाँ ऐसे दस्तावेजों का संरक्षण किया जाता है जिनका दीर्घकालिक ऐतिहासिक, कानूनी या प्रशासनिक महत्त्व होता है। इनमें सरकारी फाइलें, पत्राचार, मानचित्र, जनगणना अभिलेख, न्यायिक दस्तावेज, निजी डायरी, पांडुलिपियाँ और फोटोग्राफ शामिल होते हैं। अभिलेखागार के प्रमुख प्रकार इस प्रकार हैं–

1- **राष्ट्रीय अभिलेखागार–** जैसे भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार, जहाँ केंद्र सरकार से जुड़े ऐतिहासिक दस्तावेज सुरक्षित हैं।
2- **राज्य अभिलेखागार–** राज्यों के प्रशासनिक और ऐतिहासिक अभिलेखों का संरक्षण।
3- **निजी एवं संस्थागत अभिलेखागार–** विश्वविद्यालय, धार्मिक संस्थान, उद्योग और व्यक्तियों से जुड़े अभिलेख।
4- **डिजिटल अभिलेखागार–** स्कैन किए गए दस्तावेजों और डिजिटल सामग्री का संग्रह।

ये अभिलेखागार शोधार्थियों को प्रामाणिक स्रोत प्रदान करते हैं, जिनके आधार पर ऐतिहासिक तथ्यों की पुनर्व्याख्या संभव होती है।

संग्रहालय की अवधारणा और प्रकारः

संग्रहालय वे संस्थान हैं जहाँ ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और कलात्मक महत्व की वस्तुओं को एकत्रित, संरक्षित और प्रदर्शित किया जाता है। संग्रहालय शिक्षा और जन–संवाद का सशक्त माध्यम होते हैं। संग्रहालयों के प्रमुख प्रकार हैं–

1- **पुरातात्त्विक संग्रहालय–** प्राचीन सभ्यताओं और पुरावशेषों का प्रदर्शन।
2- **कला संग्रहालय–** चित्रकला, मूर्तिकला और हस्तशिल्प।
3- **विज्ञान संग्रहालय–** वैज्ञानिक आविष्कार और तकनीकी विकास।
4- **लोक–संस्कृति संग्रहालय–** जनजातीय, ग्रामीण और लोक जीवन की झलक।
5- **वर्चुअल संग्रहालय–** डिजिटल माध्यम से उपलब्ध संग्रह।

संग्रहालय शोधार्थियों को वस्तु–आधारित अध्ययन की सुविधा देते हैं, जिससे इतिहास और संस्कृति को प्रत्यक्ष रूप में समझा जा सकता है।

शोध में अभिलेखागार और संग्रहालयों की भूमिका:

1- प्राथमिक स्रोत का महत्त्व–
- अभिलेखागार और संग्रहालय शोध के लिए प्राथमिक स्रोत प्रदान करते हैं।
- ये शोध की प्रामाणिकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करते हैं।

2- इतिहास लेखन में योगदान–
- अभिलेखागार में सरकारी फाइलें, पत्राचार, राजकीय आदेश, जनगणना विवरण और न्यायिक दस्तावेज सुरक्षित रहते हैं।
- शोधकर्ता इनसे ऐतिहासिक घटनाओं का पुनर्निर्माण करते हैं और सामाजिक राजनीतिक परिवर्तनों का विश्लेषण करते हैं।

3- संग्रहालयों के माध्यम से वस्तु–आधारित शोध–
- मूर्तियाँ, सिक्के, हथियार, कलाकृतियाँ और पुरावशेष शोधार्थियों को प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करते हैं।
- कला इतिहास, पुरातत्व, मानवविज्ञान और लोक–संस्कृति अध्ययन में संग्रहालय अत्यंत उपयोगी हैं।

4- सांस्कृतिक और सामाजिक अध्ययन में उपयोगिता–
- लोक–संग्रहालय और क्षेत्रीय अभिलेखागार सामाजिक परंपराओं और सांस्कृतिक निरंतरता का अध्ययन संभव बनाते हैं।
- समाजशास्त्र और मानवविज्ञान में शोध की दिशा प्रदान करते हैं।

5- विज्ञान और तकनीकी शोध में योगदान–
- वैज्ञानिक उपकरणों और प्रयोगशालाओं के संग्रहालय वैज्ञानिक और तकनीकी इतिहास के अध्ययन में सहायक हैं।
- पर्यावरणीय अभिलेख और प्राकृतिक संग्रहालय जलवायु, जैव विविधता और संसाधन उपयोग का दीर्घकालिक अध्ययन संभव बनाते हैं।

6- डिजिटल तकनीक का प्रभाव–
- डिजिटलीकरण, ऑनलाइन डेटाबेस, मेटाडेटा और डिजिटल कैटलॉग से शोधार्थी दूरस्थ स्थानों से भी सामग्री तक पहुँच बना सकते हैं।
- डिजिटल मानविकी, डेटा विश्लेषण और तुलनात्मक अध्ययन में सहयोग मिलता है।

7- शोध में नवाचार और बहुआयामी दृष्टिकोण–

- अभिलेखागार और संग्रहालय केवल अतीत को संरक्षित नहीं करते, बल्कि वर्तमान और भविष्य के शोध के लिए नए दृष्टिकोण और नवाचार प्रदान करते हैं।
- शोध की गुणवत्ता और गहराई बढ़ाने में इनकी भूमिका अपरिहार्य है।

भारत में वर्तमान स्थिति और शोध की संभावनाएँः

भारत में अभिलेखागार और संग्रहालय शोध की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध हैं। वर्तमान में भारत में राष्ट्रीय अभिलेखागार, राज्य अभिलेखागार और सैकड़ों संग्रहालय सक्रिय हैं, जो ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक दस्तावेजों और वस्तुओं का संरक्षण करते हैं। इन संस्थानों की भूमिका शोध और शिक्षा में महत्वपूर्ण है।

1- राष्ट्रीय अभिलेखागार–

- भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार केंद्र सरकार से संबंधित सभी ऐतिहासिक और प्रशासनिक दस्तावेजों को सुरक्षित रखता है।
- स्वतंत्रता आंदोलन, औपनिवेशिक शासन और आधुनिक प्रशासन से जुड़े अभिलेख शोधार्थियों के लिए प्रामाणिक स्रोत हैं।

2- राज्य अभिलेखागार–

- प्रत्येक राज्य में अभिलेखागार स्थानीय प्रशासन, संस्कृति और इतिहास के अभिलेख संरक्षित करता है।
- राज्य–स्तरीय शोध में इनका महत्व अत्यधिक है।

3- संग्रहालय और उनकी भूमिका–

- राष्ट्रीय और क्षेत्रीय संग्रहालय कला, पुरातत्व, लोक–संस्कृति, विज्ञान और तकनीकी उपकरणों का संरक्षण करते हैं।
- शोधार्थियों को वस्तु–आधारित अध्ययन और प्रत्यक्ष अवलोकन का अवसर प्रदान करते हैं।

4. **डिजिटलीकरण और डिजिटल संग्रहालय–**

- डिजिटल अभिलेखागार और वर्चुअल संग्रहालय ने शोधार्थियों की पहुँच को वैश्विक बना दिया है।
- ऑनलाइन डेटाबेस, स्कैन किए गए दस्तावेज और डिजिटल कैटलॉग आधुनिक शोध के लिए उपयोगी हैं।

4- शोध की संभावनाएँ–

- ऐतिहासिक शोधः स्वतंत्रता आंदोलन, औपनिवेशिक युग, क्षेत्रीय इतिहास।
- सामाजिक एवं मानवशास्त्रीय अध्ययनः जनजातीय जीवन, लोक–संस्कृति।
- विज्ञान और तकनीक का इतिहासः उपकरण, प्रयोगशालाएँ, वैज्ञानिक दस्तावेज।
- पर्यावरणीय अध्ययनः जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, प्राकृतिक संसाधन।

5- अंतरराष्ट्रीय सहयोग और वैश्विक दृष्टिकोण–

- विदेशी अभिलेखागार और संग्रहालयों के साथ सहयोग शोध को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तारित करता है।

- तुलनात्मक और अंतर्विषयी अध्ययन के अवसर बढ़ते हैं।

6- चुनौतियाँ और सुधार की दिशा–

- संसाधनों और प्रशिक्षित मानवबल की कमी, संरक्षण की समस्याएँ, डिजिटल असमानता मुख्य चुनौतियाँ हैं।
- नियोजित नीति, प्रशिक्षण कार्यक्रम और तकनीकी सहयोग से इन चुनौतियों को दूर किया जा सकता है।

इस प्रकार भारत में अभिलेखागार और संग्रहालय शोध के लिए व्यापक संभावनाएँ प्रदान करते हैं। योजनाबद्ध प्रयास और डिजिटलीकरण के माध्यम से शोध की गुणवत्ता और पहुँच दोनों में सुधार संभव है। ये संस्थान न केवल अतीत के संरक्षण में मदद करते हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

चुनौतियाँः

अभिलेखागार और संग्रहालयों के माध्यम से शोध की संभावनाएँ व्यापक हैं, परंतु इसके समक्ष कई चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। इन चुनौतियों को समझना और उनका समाधान करना शोध और संरक्षण के दृष्टिकोण से अत्यंत आवश्यक है।

1- संसाधनों की कमी–

- कई अभिलेखागार और संग्रहालय वित्तीय और तकनीकी संसाधनों की कमी के कारण सीमित कार्यक्षमता पर काम करते हैं।
- पर्याप्त बजट न होने से संग्रह, संरक्षण और प्रदर्शनी की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

2- प्रशिक्षित मानवबल की कमी–

- कुशल अभिलेखागार, संग्रहालय वैज्ञानिक और संरक्षण विशेषज्ञों की संख्या सीमित है।
- प्रशिक्षित कर्मचारियों की कमी से दस्तावेजों और वस्तुओं की उचित देखभाल और शोध सहायता प्रभावित होती है।

3- संरक्षण और संरक्षण तकनीक की समस्या–

- पुराने दस्तावेज और कलाकृतियाँ नमी, तापमान और पर्यावरणीय प्रभावों से क्षतिग्रस्त हो सकते हैं।
- आधुनिक संरक्षण तकनीकों का अभाव, विशेषकर छोटे और क्षेत्रीय संग्रहालयों में, समस्या बनता है।

4- डिजिटल असमानता और पहुँच की सीमाएँ–

- डिजिटलीकरण में निवेश की कमी और तकनीकी असमानता शोधार्थियों की पहुँच को सीमित करती है।
- ग्रामीण या दूरदराज के क्षेत्रों के शोधार्थियों को डिजिटल सामग्री तक पहुँच में कठिनाई होती है।

5- नियम और कानूनी बाधाएँ–

- कई बार कानूनी और प्रशासनिक प्रक्रियाओं के कारण अभिलेखों और संग्रहों का अध्ययन करना जटिल हो जाता है।

- विदेशी शोधकर्ताओं के लिए अनुमतियाँ प्राप्त करना कठिन हो सकता है।

6- स्रोतों का अपूर्ण और अप्रकाशित होना–

- कई अभिलेख अभी भी अप्रकाशित हैं या उनका व्यवस्थित सूचीकरण नहीं हुआ है।
- इससे शोध की गुणवत्ता और विस्तार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

7- जन–जागरूकता की कमी–

- सामान्य जनता और शोध समुदाय में संग्रहालयों और अभिलेखागार की उपलब्धता और महत्व के प्रति जागरूकता सीमित है।
- इसके परिणामस्वरूप शोध और संरक्षण के लिए समर्थन कम मिलता है।

8- सुरक्षा और संरक्षण चुनौतियाँ–

- चोरी, नुकसान, और प्राकृतिक आपदाओं से दस्तावेज और कलाकृतियों की सुरक्षा एक बड़ी चुनौती है।
- सुरक्षा प्रबंधन और आपदा निवारण योजना की कमी संस्थानों की स्थायित्व को प्रभावित करती है।

इन चुनौतियों के बावजूद योजनाबद्ध नीतियाँ, प्रशिक्षण, अंतरराष्ट्रीय सहयोग, डिजिटलीकरण और जन–जागरूकता अभियान इन समस्याओं को काफी हद तक कम कर सकते हैं। इस प्रकार अभिलेखागार और संग्रहालयों के माध्यम से शोध की संभावनाओं को अधिक सुदृढ़ और प्रभावी बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष:

अभिलेखागार और संग्रहालय किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और बौद्धिक चेतना के संरक्षक हैं। ये संस्थान न केवल अतीत को संरक्षित करते हैं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के शोध के लिए आधार भी प्रदान करते हैं। शोध की गुणवत्ता, विश्वसनीयता और बहुआयामी दृष्टिकोण इन संस्थानों की उपलब्धियों पर निर्भर करता है।

अभिलेखागार प्रशासनिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दस्तावेजों के माध्यम से शोध को ठोस आधार प्रदान करते हैं। संग्रहालय वस्तु–आधारित अध्ययन, प्रत्यक्ष अवलोकन और सांस्कृतिक जागरूकता के माध्यम से शोधार्थियों को सहयोग प्रदान करते हैं। आधुनिक डिजिटलीकरण और वर्चुअल संग्रहालय शोध की पहुँच और संभावनाओं को और अधिक विस्तृत कर चुके हैं।

भारत में राष्ट्रीय और राज्य अभिलेखागार, क्षेत्रीय संग्रहालय, और डिजिटल प्लेटफॉर्म शोधार्थियों के लिए अमूल्य स्रोत हैं। स्वतंत्रता आंदोलन, औपनिवेशिक शासन, लोक–संस्कृति, विज्ञान और पर्यावरणीय अध्ययन जैसे क्षेत्रों में ये संस्थान निरंतर शोध की संभावनाएँ प्रदान करते हैं। इसके बावजूद संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित मानवबल, संरक्षण और डिजिटल पहुँच जैसी चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इन समस्याओं का समाधान योजनाबद्ध नीतियाँ, प्रशिक्षण, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और डिजिटलीकरण के माध्यम से संभव है।

अंततः अभिलेखागार और संग्रहालय केवल अतीत के संरक्षक नहीं हैं, बल्कि वे शोध, शिक्षा और सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना के केंद्र भी हैं। यदि इन संस्थानों का सही संरक्षण और नवाचार के साथ उपयोग किया जाए, तो ये शोध और ज्ञान निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। यह स्पष्ट है कि

भारतीय अभिलेखागार और संग्रहालयों की अपार संभावनाएँ हैं, जिन्हें संरक्षित, डिजिटलीकृत और व्यापक पहुँच के माध्यम से साकार किया जा सकता है। ये संस्थान लोकतांत्रिक और ज्ञान–आधारित समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संदर्भः

1- भारत सरकार. (2022). राष्ट्रीय अभिलेखागारः वार्षिक प्रतिवेदन. नई दिल्लीः संस्कृति मंत्रालय.

2- छाबड़ा, जी. एस. (2020). अभिलेखागार और शोध पद्धति. नई दिल्लीः कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग.

3- देसाई, ए. (2019). भारत में संग्रहालय और सांस्कृतिक धरोहर. इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू, 46(2), 215–230.

4- यूनेस्को. (2021). दस्तावेजीय धरोहर का संरक्षण. पेरिसः यूनेस्को.

5- सिंह, आर. (2018). डिजिटल अभिलेखागार और ज्ञान की पहुँच. जर्नल ऑफ इन्फॉर्मेशन स्टडीज, 12(1), 45–60.

6- राष्ट्रीय संग्रहालय. (2020). संग्रहालय शिक्षा और आउटरीच. नई दिल्ली.

7- केतेलर, ई. (2017). अभिलेखीय रुझान और शोध संभावनाएँ. अर्चिवल साइंस, 17(1), 1–15.

8- कुमार, पी. (2019). सांस्कृतिक धरोहर और संग्रहालय. जयपुरः रावत पब्लिकेशन.

9- कुक, टी. (2016). साक्ष्य, स्मृति और पहचान. अर्चिवल साइंस, 16(2), 95–120.

10- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण. (2021). संग्रहालय मार्गदर्शिका. नई दिल्ली.

11- गिलीलैंड, ए. (2018). इक्कीसवीं सदी के अभिलेखागार की अवधारणा. सोसाइटी ऑफ अमेरिकन आर्काइविस्ट्स जर्नल, 41(3), 250–265.

12- वर्मा, एस. (2020). भारतीय इतिहासलेखन में अभिलेखागार. स्टडीज इन हिस्ट्री, 36(2), 189–205.

13- यूनेस्को. (2019). सांस्कृतिक संवाद के लिए संग्रहालय. पेरिस.

14- सेन, ए. (2017). संस्कृति और विकास. नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

15- शर्मा, एम. (2021). भारत में अभिलेखागार एवं संग्रहालय. वाराणसीः चौखम्बा प्रकाशन.

श्रीमती रूकमणी शर्मा : E-Mail: sharmarukmanig@gmail.com, नम्बरः 7733889006